



Neutral Citation No. - 2026: AHC:5236

इलाहाबाद उच्च न्यायालय  
आपराधिक प्रकीर्ण जमानत याचिका संख्या - 36036 सन् 2025

ओम प्रकाश

...आवेदक(गण)

बनाम

उत्तर प्रदेश राज्य

.....प्रत्यर्थी

|                         |                                  |
|-------------------------|----------------------------------|
| याचीकाकर्ता के अधिवक्ता | :- सन्तोष कुमार सिंह, विकाश पाठक |
| प्रत्यर्थी के अधिवक्ता  | : -शासकीय अधिवक्ता               |

न्यायालय संख्या - 68

माननीय न्यायमूर्ति अशुतोष श्रीवास्तव

- आवेदक के विद्वान अधिवक्ता तथा राज्य-प्रतिवादी के विद्वान अपर शासकीय अधिवक्ता श्री राजेश कुमार सिंह, को सुना गया एवं प्रकरण के अभिलेख का अवलोकन किया गया।
- भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता, 2023 की धारा 483 के अन्तर्गत यह जमानत आवेदन अभियुक्त-आवेदक की ओर से वाद अपराध संख्या 626 वर्ष 2025 में भारतीय न्याय संहिता (बी.एन.एस.) की धारा 318(4), 319(2), 336(3), 338, 340(2) एवं आबकारी अधिनियम की धारा 60(A), 60, 63, 72 के अन्तर्गत, थाना कोतवाली, जिला मैनपुरी, में जमानत पर रिहाई हेतु प्रस्तुत किया गया है।
- आवेदक के विद्वान अधिवक्ता ने तर्क दिया कि अभियुक्त-आवेदक निर्दोष है। उसे इस वाद अपराध संख्या में मिथ्या रूप से फँसाया गया है और वह दिनांक 29.8.2025 से जेल में निरुद्ध है। प्रथम सूचना रिपोर्ट में आवेदक के विरुद्ध आरोपित कोई भी अपराध सिद्ध नहीं होता। जमानत आवेदन के समर्थन में दाखिल शपथपत्र के पैरा 15 में दो प्रकरणों के आपराधिक इतिहास को स्पष्ट किया गया है। आवेदक के विद्वान अधिवक्ता ने आगे प्रस्तुत किया कि समान परिस्थितियों वाले सह-अभियुक्त अमित @ टिल्लू को इस न्यायालय द्वारा दिनांक 19.12.2025 को आपराधिक प्रकीर्ण जमानत आवेदन संख्या 40110 वर्ष 2025 में पहले ही जमानत पर रिहा किया जा चुका है। जमानत पर रिहाई की स्थिति में न्याय की प्रक्रिया से

अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।



भागने अथवा साक्ष्य के साथ छेड़छाड़ करने की कोई संभावना नहीं है। अतः जमानत की प्रार्थना की गई है।

4. इसके विपरीत, विद्वान सहायक शासकीय अधिवक्ता ने जोरदार विरोध किया है, किन्तु इस तथ्य का खण्डन नहीं कर सके कि सह-अभियुक्त को पहले ही जमानत पर रिहा किया जा चुका है। इस प्रकरण में आरोप-पत्र दाखिल किया जा चुका है।

5. उपरोक्त समस्त तथ्यों एवं परिस्थितियों, आरोपों की प्रकृति, दोषसिद्धि की स्थिति में दण्ड की गंभीरता, समर्थक साक्ष्य की प्रकृति, साक्षियों के साथ छेड़छाड़ की उचित आशंका एवं प्रथम दृष्टया प्रकरण पर विचार करते हुए, किन्तु प्रकरण के गुण-दोष पर कोई टिप्पणी किए बिना, जमानत का प्रकरण बनता है।

6. तदनुसार, जमानत आवेदन **स्वीकार** किया जाता है।

7. **अभियुक्त-आवेदक, ओम प्रकाश को** उपरोक्त वाद अपराध संख्या में व्यक्तिगत बन्धपत्र तथा दो विश्वसनीय प्रतिभूतियों पर, समान राशि में, संबंधित न्यायालय की संतुष्टि के अनुसार, निम्नलिखित शर्तों के अधीन जमानत पर रिहा किया जाए:

(i) आवेदक साक्ष्य के साथ छेड़छाड़ नहीं करेगा।

(ii) आवेदक किसी आपराधिक गतिविधि में लिप्त नहीं होगा।

(iii) आवेदक अभियोजन पक्ष के साक्षियों पर दबाव/धमकी नहीं देगा और मुकदमे में सहयोग करेगा।

(iv) आवेदक विचार न्यायालय द्वारा नियत प्रत्येक तिथि पर नियमित रूप से उपस्थित रहेगा, जब तक कि संबंधित न्यायालय द्वारा अधिवक्ता के माध्यम से उसकी व्यक्तिगत उपस्थिति माफ न की गई हो।

9. उपरोक्त किसी भी शर्त के उल्लंघन की स्थिति में अवर न्यायालय उसकी जमानत निरस्त करने की कार्यवाही करने के लिए स्वतंत्र होगा। बिना प्रस्तुत साक्ष्य के आधार पर स्वतंत्र रूप से अपने निष्कर्ष पर पहुँचने के लिए सम्पूर्णतः स्वतंत्र होगा।

(आशुतोष श्रीवास्तव, न्यायमूर्ति)

7 जनवरी, 2026

पीपी

अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।